শ্রীঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

শ্রীমান্ ৱেঙ্কটনাথার্যঃ কৱিতার্কিককেসরী।

ৱেদান্তাচার্যৱর্যো মে সন্নিধত্তাং সদা হৃদি॥

শ্রী মেল্পপত্তূর্ নারাযণভট্টতিরি ৱিরচিতম্

॥শ্রীমন্নারাযণীযম্॥

দশক - ২৪

This document has been prepared by*

Sunder Kidambi

with the blessings of

শ্রী রঙ্গরামানুজ মহাদেশিকন্

His Holiness *śrīmad āṇḍavan* of *śrīraṅgam*

*This was typeset using Bengali for TEX.

श्रीः
श्रीमते कृष्णाय परब्रह्मणे नमः
श्रीमते रामानुजाय नमः

॥श्रीमन्नारायणीयम् ॥

दशक - २४

प्रह्लादचरितवर्णनम्

हिरण्याक्षे पोत्रीप्रवरवपुषा देव भवता
हते शोकक्रोधग्लपितधृतिरेतस्य सहजः।
हिरण्यप्रारम्भः कशिपुरमरारातिसदसि
प्रतिज्ञामातेने तव किल वधार्थं मधुरिपो॥ १ ॥

विधातारं घोरं स खलु तपसित्वा नचिरतः
पुरः साक्षात्कुर्वन् सुरनरमृगाद्यैरनिधनम्।
वरं लब्ध्वा दृप्तो जगदिह भवन्नायकमिदं
परिक्षुन्दन्निन्द्रादहरत दिवं त्वामगणयन्॥ २ ॥

निहन्तुं त्वां भूयस्तव पदमवाप्तस्य च रिपो-
र्बहिर्दृष्टेरन्तर्दधिथ हृदये सूक्ष्मवपुषा।
नदन्नुच्चैस्तत्राप्यखिलभुवनान्ते च मृगयन्
भिया यातं मत्वा स खलु जितकाशी निववृते॥ ३ ॥

ततोऽस्य प्रह्लादः समजनि सुतो गर्भवसतौ
मुनेर्वीणापाणेरधिगतभवद्भक्तिमहिमा।
स वै जात्या दैत्यःशिशुरपि समेत्य त्वयि रतिं
गतस्त्वद्भक्तानां वरद परमोदाहरणताम्॥ ४ ॥

सुरारीणां हास्यं तव चरणदास्यं निजसुते
स दृष्ट्वा दुष्टात्मा गुरुभिरशिशिक्षच्चिरममुम्।
गुरुप्रोक्तं चासाविदमिदमभद्राय दृढमि-
त्यपाकुर्वन् सर्वं तव चरणभक्त्यैव ववृधे॥ ५ ॥

অধীতেষু শ্ৰেষ্ঠং কিমিতি পরিপৃষ্টেথ তনযে
ভৱদভক্তিং ৱৰ্যামভিগদতি পৰ্যাকুলধৃতিঃ।
গুরুভ্যো রোষিত্বা সহজমতিরস্যেত্যভিৱিদন্
ৱধোপাযানস্মিন্ ৱ্যতনুত ভৱতপাদশরণে॥ ৬ ॥

স শূলৈরাৱিদ্ধঃ সুবহু মথিতো দিগগজগণৈ-
ৰ্মহাসৰ্পৈৰ্দষ্টোপ্যনশনগরাহারৱিধুতঃ।
গিরীন্দ্রাৱক্ষিপ্তোপ্যহহ! পরমাত্মন্নযি ৱিভো
ত্বযি ন্যস্তাত্মত্বাত্ কিমপি ন নিপীডামভজত॥ ৭ ॥

ততঃ শঙকাৱিষ্টঃ স পুনরতিদুষ্টোস্য জনকো
গুরূক্ত্যা তদগেহে কিল ৱরুণপাশৈস্তমরুণত্।
গুরোশ্চাসান্নিধ্যে স পুনরনুগান্ দৈত্যতনযান্
ভৱদভক্তেস্তত্বং পরমমপি ৱিজ্ঞানমশিষত্॥ ৮ ॥

পিতা শৃণৱন্ বালপ্রকরমখিলং ত্বতস্তুতিপরং
রুষান্ধঃ প্রাহৈনং কুলহতক কস্তে বলমিতি।
বলং মে ৱৈকুণ্ঠস্তৱ চ জগতাং চাপি স বলং
স এৱ ত্রৈলোক্যং সকলমিতি ধীরোযমগদীত্॥ ৯ ॥

অরে ক্বাসৌ ক্বাসৌ সকলজগদাত্মা হরিরিতি
প্রভিন্তে স্ম স্তংভং চলিতকরৱালো দিতিসুতঃ।
অতঃ পশ্চাদ্বিষ্ণো ন হি ৱদিতুমীশোস্মি সহসা
কৃপাত্মন্ ৱিশ্বাত্মন্ পৱনপুরৱাসিন্ মৃডয মাম্॥ ১০ ॥

★★★★★★★★★★